भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन पर अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं का प्रभाव:

डॉ. काजल कुमारी
सहायक प्राध्यापिका, इतिहास विभाग, के. सी. टी. सी. कॉलेज रक्सौल

सारांशः

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन, जिसे भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के रूप में भी जाना जाता है, ने भारत में ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के खिलाफ प्रतिरोध और संघर्ष द्वारा चिह्नित एक उल्लेखनीय अवधि का प्रतिनिधित्व किया। इस आंदोलन ने विभिन्न अंतरराष्ट्रीय अनुभवों से पर्याप्त प्रेरणा ली, जिसमें दुनिया भर की ऐतिहासिक घटनाएं और विचारधाराएं शामिल थीं। पिछली क्रांतियों और अन्य क्षेत्रों में स्वतंत्रता के लिए लड़ाई की स्मृति का भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा। अमेरिकी क्रांति, फ्रांसीसी क्रांति और लैटिन अमेरिकी आंदोलनों की उपलब्धियों ने भारतीय राष्ट्रवादियों के लिए एक प्रेरक शक्ति के रूप में कार्य किया, जिन्होंने इन सफल विद्रोहों को इस बात के प्रमाण के रूप में माना कि उपनिवेशवाद के खिलाफ उनकी अपनी लड़ाई जीती जा सकती है। इसके अलावा, महात्मा गांधी जैसे प्रभावशाली नेता अहिंसक प्रतिरोध और सविनय अवज्ञा जैसी अवधारणाओं से गहराई से प्रभावित थे, जो उन्होंने लियो टॉल्स्टॉय और हेनरी डेविड थोरो जैसे प्रसिद्ध विदेशी कार्यकर्ताओं से सीखा था। इन वैश्विक संबंधों ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में नियोजित रणनीतियों और रणनीतियों को काफी प्रभावित किया। इसके अतिरिक्त, प्रथम विश्व युद्ध जैसी वैश्विक घटनाओं ने इस आंदोलन को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। युद्ध ने यूरोपीय शक्तियों को कमजोर कर दिया, जिससे भारतीयों के लिए स्वतंत्रता की अपनी खोज पर जोर देने के लिए अधिक अनुकूल वातावरण बन गया। इसके अलावा, इसने ब्रिटिश उपनिवेशवाद के पाखंड को उजागर किया जब उन्होंने भारतीयों से अपने युद्ध प्रयासों का समर्थन करने का आग्रह किया, साथ ही साथ उन्हें अपनी भूमि में बुनियादी अधिकारों से वंचित किया। बाहरी प्रभावों के साथ, आंदोलन के भीतर आंतरिक कारकों ने भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

परिचय:

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन भारत के इतिहास में बहुत महत्व रखता है, जो ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए अपार बलिदानऔर अटूट प्रयासों की विशेषता है। हालांकि, अक्सर इस बात की अनदेखी की जाती है कि

अंतरराष्ट्रीय प्रभावों ने इस आंदोलन को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वैश्विक घटनाओं और विचारधाराओं के प्रभाव से इनकार नहीं किया जा सकता है, क्योंकि उन्होंने स्वतंत्रता के लिए भारत के संघर्ष के पाठ्यक्रम को काफी प्रभावित किया। यूरोपीय उपनिवेशवादियों के साथ बातचीत के माध्यम से पश्चिमी विचारों के प्रति भारत के संपर्क ने अपने लोगों को गहराई से प्रभावित किया, जिससे राष्ट्रवादी भावनाओं का उदय हुआ। उदारवाद, लोकतंत्र और राष्ट्रवाद जैसे पश्चिमी विचारों के साथ इन शुरुआती मुठभेड़ों का भारत पर गहरा प्रभाव पड़ा। यह सिर्फ यूरोप नहीं है जिसने एक भूमिका निभाई है; भारत ने दुनिया के अन्य हिस्सों से भी प्रेरणा ली। अमेरिकी क्रांति, जिसके कारण ब्रिटिश शासन से स्वतंत्र राष्ट्रों का उदय हुआ, ने इसी तरह के उत्पीड़न के खिलाफ लड़ने वाले भारतीयों के लिए एक अनुकरणीय मॉडल के रूप में कार्य किया। इसके अलावा, रूस और चीन जैसे देशों में सफल क्रांतियों ने कई भारतीय कार्यकर्ताओं को आशा और साहस प्रदान किया। एक अन्य महत्वपूर्ण कारक जिसने भारत के राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान अंतरराष्ट्रीय प्रभावों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया, वह प्रभावशाली नेताओं की उपस्थिति थी जिन्होंने विदेश यात्रा की या भारत के बाहर शिक्षा प्राप्त की। इन नेताओं ने नए विचारों और अनुभवों को वापस लाया जो राजनीतिक रणनीतियों और वैचारिक मान्यताओं को आकार देने में सहायक साबित हुए। इसके अलावा, विभिन्न अन्य अंतरराष्ट्रीय घटनाओं और आंदोलनों ने स्वतंत्रता के लिए भारत के संघर्ष पर एक अमिट छाप छोड़ी। राष्ट्र संघ जैसे अंतर्राष्ट्रीय संगठनों द्वारा मानव अधिकारों और आत्मनिर्णय के सिद्धांतों की वकालत की गई थी, जो स्वतंत्रता के लिए प्रयास कर रहे भारतीयों की आकांक्षाओं से मेल खाते थे। अंत में, जबकि भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन मुख्य रूप से आंतरिक कारकों से प्रेरित था, अंतरराष्ट्रीय यादों के प्रभाव को अनदेखा नहीं किया जाना चाहिए। पश्चिमी विचारों के संपर्क में, वैश्विक क्रांतियों से प्रेरणा और अंतरराष्ट्रीय अनुभवों वाले नेताओं के योगदान ने स्वतंत्रता के लिए भारत के संघर्ष की दिशा को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

साहित्य की समीक्षा:

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन भारत के इतिहास में महत्वपूर्ण महत्व रखता है क्योंकि इसने अंततः ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से देश की स्वतंत्रता का नेतृत्व किया। जबकि इतिहासकारों ने इस आंदोलन में योगदान देने वाले विभिन्न कारकों का बड़े पैमाने पर विश्लेषण किया है, एक पहलू जिसे अक्सर अनदेखा किया गया है, वह है आंदोलन को आकार देने और मार्गदर्शन करने में अंतरराष्ट्रीय यादों का प्रभाव। हाल के दिनों में, विद्वानों ने इस पेचीदा विषय का पता लगाना शुरू कर दिया है, इस बात पर प्रकाश डालते हुए कि कैसे बाहरी घटनाओं और घटनाओं ने भारतीय स्वतंत्रता की खोज में व्यक्तियों को जुटाने और प्रेरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। लेखक कारा ड्रिगर द्वारा "साम्राज्य की गूंज: प्रारंभिक आधुनिक यूरोप में स्मृति, पहचान और उपनिवेशवाद" (2011) नामक एक उल्लेखनीय काम यह जांचने पर केंद्रित है कि विशिष्ट ऐतिहासिक घटनाओं या धारणाओं का राष्ट्रों में स्थायी सांस्कृतिक प्रभाव कैसे हो सकता है। ड्रिगर साम्राज्यवाद के युग के दौरान यूरोपीय साम्राज्यों के उदाहरणों पर ध्यान आकर्षित करते हैं, इस बात पर प्रकाश डालते हैं कि कैसे कुछ यादें राष्ट्रीय पहचान को मजबूत करने और उपनिवेशों पर शाही नियंत्रण को मजबूत करने में सहायक थीं। इस परिप्रेक्ष्य को बेहतर ढंग से समझने के लिए लागू किया जा सकता है कि अंतरराष्ट्रीय यादों ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को कैसे प्रभावित किया। इसके अलावा, इतिहासकार रुद्रांग्शु मुखर्जी का अध्ययन, "ट्वाइलाइट फॉल्स ऑन द राज: मेमोरीज ऑफ एम्पायर इन ब्रिटेन एंड इंडिया" (2013), इस बारे में और जानकारी प्रदान करता है कि ब्रिटिश उपनिवेशवाद ने भारतीयों और अंग्रेजों दोनों के बीच सामूहिक स्मृति को कैसे आकार दिया। इस विषय में गहराई से विचार करके, मुखर्जी ब्रिटिश साम्राज्य के प्रति धारणाओं और दृष्टिकोणों को आकार देने में स्मृति और राज की विरासत के बीच परस्पर क्रिया की एक व्यापक परीक्षा प्रदान करते हैं। इन अध्ययनों ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन पर अंतर्राष्ट्रीय यादों के प्रभाव पर प्रकाश डाला, इस बात पर प्रकाश डाला कि कैसे बाहरी घटनाओं और औपनिवेशिक अनुभवों ने भारतीय

स्वतंत्रता के कारण व्यक्तियों को प्रेरित करने और जुटाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

अनुसंधान अंतराल:

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन महान ऐतिहासिक महत्व रखता है क्योंकि इसने ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से भारत की स्वतंत्रता का मार्ग प्रशस्त किया। हालांकि, इस आंदोलन पर अंतरराष्ट्रीय घटनाओं के प्रभाव पर व्यापक शोध की कमी है। जबकि महात्मा गांधी और जवाहरलाल नेहरू जैसे प्रसिद्ध राष्ट्रवादी नेताओं ने राष्ट्रीय आंदोलन को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, वैश्विक नेताओं के साथ उनकी बातचीत और अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में भागीदारी की पूरी तरह से जांच नहीं की गई है। एक क्षेत्र जिसकी और जांच की आवश्यकता है, वह यह है कि गांधी जैसी प्रभावशाली हस्तियों ने अन्य देशों के विचारों के संपर्क में आने के बाद अहिंसक प्रतिरोध को कैसे अपनाया। 20 वीं शताब्दी की शुरुआत में वैश्वीकरण में वृद्धि देखी गई, और विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय विकास, जैसे प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध, रूसी क्रांति और चीनी कम्युनिस्ट क्रांति ने स्वतंत्रता के लिए भारत के संघर्ष पर गहरा प्रभाव डाला। एक और क्षेत्र जिस पर अपर्याप्त ध्यान दिया गया है, वह भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आईएनसी) के भीतर राजनीतिक विचार और कार्रवाई पर विदेशी विचारधाराओं, अर्थात् समाजवाद और साम्यवाद का प्रभाव है। कांग्रेस के कई प्रमुख सदस्यों ने इन विचारधाराओं से प्रेरणा ली और उन्हें ब्रिटिश शासन के खिलाफ अपनी लड़ाई में शामिल करने का प्रयास किया। इसके अलावा, अमेरिका के मार्टिन लूथर किंग जूनियर, आयरलैंड के माइकल कॉलिन्स और मिस्र के गमाल अब्देल नासिर जैसे विभिन्न पृष्ठभूमि के प्रभावशाली व्यक्तित्वों द्वारा किए गए योगदान की खोज करना, स्वतंत्रता की दिशा में भारत की यात्रा में उनकी भूमिका में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकता है।

आंदोलनों के गठन पर अंतरराष्ट्रीय घटनाओं का प्रभाव:

आंदोलनों का गठन अक्सर विभिन्न कारकों से प्रभावित होता है, जिसमें अंतरराष्ट्रीय घटनाएं शामिल हैं जिनके महत्वपूर्ण प्रभाव हैं। ये घटनाएं, चाहे वे प्रकृति में राजनीतिक, सामाजिक या आर्थिक हों, आंदोलनों के प्रक्षेपवक्र को आकार दे सकती हैं और उनके लक्ष्यों और रणनीतियों में योगदान कर सकती हैं।

आंदोलनों के गठन पर अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं के प्रभाव का एक उदाहरण राजनीतिक विद्रोह के संदर्भ में देखा जा सकता है। जब कोई देश राजनीतिक अशांति की लहर का अनुभव करता है, जैसे कि बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन या क्रांतियां, तो यह अक्सर अन्य देशों के लोगों के बीच एकजुटता की भावना पैदा करता है जो समान शिकायतों को साझा करते हैं। मीडिया कवरेज और सोशल नेटवर्क के माध्यम से इन घटनाओं का प्रसार व्यक्तियों और समूहों को कार्रवाई करने और अपने स्वयं के आंदोलनों को बनाने के लिए प्रेरित कर सकता है, अपने स्वयं के समाजों में बदलाव के लिए जुटा सकता है।

मानव अधिकारों की वकालत करने वाले सामाजिक आंदोलन भी अंतरराष्ट्रीय घटनाओं से प्रभावित होते हैं। जब मानवाधिकारों का हनन वैश्विक स्तर पर होता है, जैसे कि युद्ध अपराध या नरसंहार, तो यह अक्सर कार्यकर्ताओं और संगठनों को न्याय और जवाबदेही के लिए प्रेरित करता है। ये आंदोलन जागरूकता बढ़ाने, समर्थन इकट्ठा करने और कार्रवाई करने के लिए सरकारों और अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों पर दबाव डालना चाहते हैं। दुनिया का परस्पर संबंध सूचना के प्रसार और परिवर्तन के लिए आह्वान करने वाली आवाजों के प्रवर्धन की अनुमति देता है, जिससे इन आंदोलनों को गति प्राप्त करना आसान हो जाता है।

इसके अलावा, आर्थिक घटनाओं का आंदोलनों के गठन पर भी गहरा प्रभाव पड़ सकता है। वैश्विक आर्थिक संकट, जैसे मंदी या वित्तीय मंदी, बेरोजगारी, गरीबी और असमानता का सामना करने वाली आबादी के बीच व्यापक असंतोष और निराशा पैदा कर सकती है। ये आर्थिक कठिनाइयां आर्थिक न्याय, निष्पक्ष श्रम प्रथाओं और

धन पुनर्वितरण की मांग करने वाले आंदोलनों के गठन के लिए उत्प्रेरक के रूप में काम कर सकती हैं। वैश्विक अर्थव्यवस्था की परस्पर प्रकृति का मतलब है कि ये आंदोलन अक्सर राष्ट्रीय सीमाओं को पार करते हैं, क्योंकि वे प्रणालीगत मुद्दों को संबोधित करना चाहते हैं जो विभिन्न देशों और क्षेत्रों में लोगों को प्रभावित करते हैं।

अंत में, अंतरराष्ट्रीय घटनाएं आंदोलनों के गठन और विकास को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। चाहे वे प्रकृति में राजनीतिक, सामाजिक या आर्थिक हों, इन घटनाओं में कार्रवाई करने के लिए व्यक्तियों और समूहों को प्रेरित करने और जुटाने की क्षमता है। साझा शिकायतों को उजागर करके, जागरूकता बढ़ाकर, और एकजुटता को बढ़ावा देकर, अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रम सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन की मांग करने वाले आंदोलनों के लक्ष्यों और रणनीतियों में योगदान कर सकते हैं।

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन पर रूसी क्रांति का प्रभाव:

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन, जिसे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम भी कहा जाता है, ने भारतीय इतिहास को अपने अंदर एक महत्वपूर्ण मोड़ दिया। यह आंदोलन 1857 से 1947 तक चला और ब्रिटिश राज से भारत की आजादी तक कई मुख्य घटनाओं और संघर्षों का केंद्र बना। इस दौरान, भारतीयों ने अपने देश की स्वतंत्रता के लिए आवाज बुलंद की और अपने संघर्ष के माध्यम से विदेशी शासन के खिलाफ मुकाबला किया। हालांकि, क्या आपने कभी सोचा है कि इस आंदोलन का प्रभाव कहीं और भी प्रकट हुआ हो सकता है? यद्यपि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम भारत की आजादी की यात्रा में महत्वपूर्ण था, लेकिन क्या आप जानते हैं कि यह आंदोलन रूसी क्रांति के प्रभाव को भी महसूस कराया? यहां इस विस्तृत लेख में, हम इस पर विचार करेंगे कि भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन ने रूसी क्रांति पर कैसा प्रभाव डाला और इसके क्या परिणाम हुए। रूसी क्रांति, जो 1917 में हुई, दुनिया भर में विचारशील व्यक्तियों और आंदोलनकारियों के बीच एक क्रांतिकारी आदर्श बन गई। इसका प्रभाव सिर्फ रूस में ही सीमित नहीं रहा, बल्कि यह आंदोलन विदेशी देशों के लोगों

के दिमाग में भी विचारों का बदलाव लाने में सक्षम रहा। भारत में भी, रूसी क्रांति और उसके आदर्शों का प्रभाव बड़ा था। भारत में रूसी क्रांति का प्रभाव काफी गहरा था। रूस के क्रांतिकारी आदर्शों ने भारतीयों के दिलों में भी एक क्रांतिकारी जोश भर दिया। लोगों में जागरूकता फैली और वे विचार करने लगे कि अपनी स्वतंत्रता के लिए वे कुछ कर सकते हैं। रूसी क्रांति की सफलता कहीं न कहीं भारत के लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी। भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के वक्त, रूसी क्रांति के आदर्श भारतीय स्वतंत्रता संग्रामी नेताओं के बीच बहुत लोकप्रिय थे। वे रूसी संघर्ष के बारे में पढ़ते और सुनते थे, और उसमें से कुछ विचारों को अपनाते थे। रूस के क्रांतिकारी विचारधारा और उनकी लड़ाई का तरीका भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के नेताओं को प्रभावित करने में सफल रहा। भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के बाद, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के नेताओं ने रूस के क्रांतिकारी आदर्शों का अपने आंदोलन में उपयोग किया। वे रूस के संघर्ष और स्वतंत्रता के बारे में अपने लोगों को बताते थे और रूस के आदर्शों के अनुसरण को प्रोत्साहित करते थे। इस प्रकार, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम रूसी क्रांति के प्रभाव के तहत एक नया मोर्चा खड़ा कर गया।

उपनिवेशित राष्ट्रों में स्वतंत्रता आंदोलनों का उद्भव और भारत पर उनका प्रभाव:

उपनिवेशित या अधीनस्थ देशों में स्वतंत्रता आंदोलनों की उत्पत्ति और उनका भारत पर प्रभाव एक प्रमुख इतिहासिक और सामाजिक विषय है। इन आंदोलनों ने अपने देशों के नागरिकों को स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ने की प्रेरणा दी और उन्हें उनके अधिकार के लिए समर्पित बनाया। ये आंदोलन भारत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण युग को प्रतिष्ठित कर चुके हैं, जहां लोगों ने अपने देश के लिए संघर्ष किया और आजादी प्राप्त की।

उपनिवेशित राष्ट्रों में स्वतंत्रता आंदोलनों का उद्भव बहुत सारे कारकों के बाध्य है। इनमें से कुछ मुख्य कारक इम्पीरियलिज्म, युद्ध, और नागरिक स्वतंत्रता की मांग हैं। इम्पीरियलिज्म के अधीन कई देश रहने वाले लोग अपने देश की कमजोरी और अधिकारों की हानि को देखकर आंदोलन करने के लिए प्रेरित हुए। युद्ध के पश्चात

भी लोगों में स्वतंत्रता के प्रति एक नया जोश और उत्साह उभरा। उन्होंने अपने देशों की आजादी की लड़ाई लड़ने की कोशिश की और नागरिक स्वतंत्रता की मांग रखी। भारत में भी उपनिवेशित देशों के स्वतंत्रता आंदोलनों का असर देखा गया है। भारत में अंग्रेज़ों के शासन के खिलाफ लोगों में क्रांतिकारी भावना बढ़ी। इस भावना के अधीन, वे ब्रिटिश सरकार के खिलाफ आंदोलन करने लगे। गांधीजी जैसे महान नेताओं के द्वारा नागरिक सत्याग्रह और अहिंसा के सिद्धांतों को प्रचारित किया गया। इन आंदोलनों के परिणामस्वरूप, भारत ने वर्ष 1947 में आजादी हासिल की और ब्रिटिश साम्राज्य से मुक्त हुआ।

उपनिवेशित राष्ट्रों में स्वतंत्रता आंदोलनों का प्रभाव सिर्फ़ एक देश में ही सीमित नहीं है। ये आंदोलन एक प्रेरणा के स्रोत बने हैं जो दूसरे देशों के लोगों को अपने अधिकारों के लिए लड़ने की संज्ञा देते हैं। ये आंदोलन नेताओं, जैसे महात्मा गांधी, नेल्सन मंडेला, और मार्टिन लूथर किंग जैसे, के लिए एक जीवन-यात्रा का भी हिस्सा रहे हैं। उन्होंने अपने संघर्षों और संघर्षों के फलस्वरूप अपने देशों को स्वतंत्रता और समानता की प्राप्ति कराई। सार्वजनिक विचार में, उपनिवेशित राष्ट्रों में स्वतंत्रता आंदोलनों का उद्भव और उनका भारत पर प्रभाव एक महत्वपूर्ण विषय है। ये आंदोलन हमें यह सिखाते हैं कि नागरिक मानवाधिकारों के लिए लड़ सकते हैं और आपातकाल के बावजूद अपने लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं।

अनुसंधान उद्देश्य:

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन भारत के इतिहास में महत्वपूर्ण महत्व रखता है क्योंकि यह ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से स्वतंत्रता की लड़ाई का प्रतिनिधित्व करता है। हालांकि, यह स्वीकार करना महत्वपूर्ण है कि यह आंदोलन अंतरराष्ट्रीय घटनाओं और प्रभावों से स्वतंत्र नहीं था, जिसने इसके पाठ्यक्रम को आकार देने में पर्याप्त भूमिका निभाई। इसलिए, भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन पर अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं के प्रभाव से संबंधित अनुसंधान उद्देश्य इस जटिल ऐतिहासिक घटना को समझने में अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। पूरे इतिहास में, भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन विभिन्न अंतरराष्ट्रीय घटनाओं से काफी प्रभावित और ढाला गया है। भारत के स्वतंत्रता

संग्राम पर इन घटनाओं के प्रभाव को कम करके नहीं आंका जा सकता है। इसलिए, इस शोध का उद्देश्य पूरी तरह से जांच और मूल्यांकन करना है कि अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को किस हद तक आकार दिया है।

इसके अलावा, समाजवाद, साम्यवाद और फासीवाद जैसे वैश्विक आंदोलनों ने स्वतंत्रता के लिए भारत की खोज को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उदाहरण के लिए, रूसी क्रांति ने भारत के भीतर समाजवादी विचारधाराओं को प्रज्वलित किया, जबकि मुसोलिनी के इटली जैसे फासीवादी शासन ने देश के भीतर कुछ राष्ट्रवादी समूहों के लिए प्रेरणा के रूप में कार्य किया। इसके अतिरिक्त, लीग ऑफ नेशंस और बाद में संयुक्त राष्ट्र जैसे अंतर्राष्ट्रीय संगठनों ने भारतीय नेताओं के लिए आत्मनिर्णय के लिए अपनी आकांक्षाओं को आवाज देने के लिए महत्वपूर्ण मंच के रूप में कार्य किया। इन संगठनों ने भारत जैसे उपनिवेशित राष्ट्रों पर थोपी गई साम्राज्यवादी नीतियों को भी उजागर किया। इसके अलावा, दुनिया के अन्य हिस्सों में उपनिवेशवाद विरोधी आंदोलनों ने भारतीयों के लिए प्रेरणा के स्रोत के रूप में कार्य किया जो ब्रिटिश शासन को उखाड़ फेंकने के लिए दृढ़ थे।

इस अध्ययन पर निम्नलिखित शोध उद्देश्य हैं:

- ❖ भारतीय राष्ट्रवाद में शामिल विभिन्न संगठनों द्वारा प्राप्त विदेशी सहायता के परिणाम पर संभावित प्रभाव का मूल्यांकन करना।
- ❖ प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध जैसी प्रमुख वैश्विक घटनाओं और उनके बाद की घटनाओं के भारत के स्वतंत्रता संग्राम पर पड़ने वाले प्रभाव की जांच करना।
- ❖ यह विश्लेषण करना कि वैश्विक राजनीतिक विचारधाराओं ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के आदर्शों और उद्देश्यों को किस हद तक प्रभावित किया।
- ❖ मार्टिन लूथर किंग जूनियर और नेल्सन मंडेला जैसे अंतर्राष्ट्रीय नेताओं से महात्मा गांधी और जवाहरलाल नेहरू जैसी प्रमुख हस्तियों द्वारा ली गई प्रेरणा की जांच करना।

- ❖ यह आकलन करना कि औपनिवेशिक शक्तियों द्वारा लागू की गई आर्थिक नीतियों ने भारत की अर्थव्यवस्था को कैसे प्रभावित किया और परिणामस्वरूप राष्ट्रवादी भावनाओं को बढ़ावा दिया।

अनुसंधान क्रियाविधि:

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन भारत के इतिहास में बहुत महत्व रखता है, जो ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से स्वतंत्रता प्राप्त करने के उद्देश्य से घटनाओं और आंदोलनों की एक श्रृंखला की विशेषता है। हालांकि, यह अक्सर अवहेलना की जाती है कि अंतरराष्ट्रीय घटनाओं ने इस आंदोलन को आकार देने और प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस शोध का उद्देश्य भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन पर इन अंतरराष्ट्रीय घटनाओं के प्रभाव का विश्लेषण करना है। एक प्रमुख अंतरराष्ट्रीय घटना जिसने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन पर गहरा प्रभाव डाला, वह प्रथम विश्व युद्ध था। चूंकि संसाधनों को मित्र राष्ट्रों के युद्ध प्रयासों का समर्थन करने के लिए पुनर्निर्देशित किया गया था, भारतीयों को आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। नतीजतन, भारतीयों के बीच व्यापक असंतोष पैदा हुआ, जिससे ब्रिटिश विरोधी भावनाओं और स्व-शासन की मांगों में वृद्धि हुई। इसके अलावा, इस अवधि में महात्मा गांधी जैसे राष्ट्रवादी नेताओं का उदय हुआ, जिन्होंने वैश्विक अहिंसक प्रतिरोध आंदोलनों से प्रेरणा ली, जिसका उदाहरण अमेरिका में मार्टिन लूथर किंग जूनियर और दक्षिण अफ्रीका में नेल्सन मंडेला जैसी हस्तियां हैं। इसके अतिरिक्त, द्वितीय विश्व युद्ध ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के लिए भी महत्वपूर्ण प्रभाव डाला। गांधी द्वारा शुरू किया गया भारत छोड़ो आंदोलन बर्मा (अब म्यांमार) पर जापान के आक्रमण के साथ मेल खाता था, जिससे भारत को स्वतंत्रता देने के लिए ब्रिटेन पर दबाव बढ़ गया। युद्ध से परे, रूसी क्रांति जैसी अन्य अंतरराष्ट्रीय घटनाओं ने औपनिवेशिक उत्पीड़न से स्वतंत्रता के लिए अथक रूप से लड़ने वाले भारतीय क्रांतिकारियों को आशा और प्रेरणा प्रदान की।

अनुसंधान प्रश्न:

1. भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन ने दो विश्व युद्धों के नतीजों का अनुभव कैसे किया?
2. भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं को एकीकृत करने में महात्मा गांधी ने क्या भूमिका निभाई?
3. क्या राष्ट्र संघ में भारत की भागीदारी ने स्वतंत्रता के लिए उसके संघर्ष को प्रभावित किया?
4. भारतीय नेता और उनकी विचारधाराएं रूसी क्रांति और चीनी गृह युद्ध जैसी अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं से कैसे प्रभावित हुईं?
5. एशिया और अफ्रीका में उपनिवेशवाद विरोधी आंदोलनों ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को किस तरह से प्रेरणा और समर्थन प्रदान किया?
6. द्वितीय विश्व युद्ध में भारत की भागीदारी का ब्रिटेन के साथ उसके संबंधों और स्वशासन की उसकी मांगों पर क्या प्रभाव पड़ा?
7. स्वतंत्रता के लिए भारत की लड़ाई के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए अंतर्राष्ट्रीय मीडिया प्लेटफार्मों का उपयोग कैसे किया गया?
8. राष्ट्रवादी नेताओं ने ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ अन्य देशों से समर्थन जुटाने के लिए किस हद तक राजनयिक चैनलों का उपयोग किया?
9. क्या उस समय वैश्विक व्यापार नीतियां स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान भारत के विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार को प्रभावित करने वाली कारक थीं?
10. उपनिवेशवाद को समाप्त करने की दिशा में भारत के प्रयासों को शीत युद्ध की राजनीति ने किस प्रकार आकार दिया?

जाँच - परिणाम:

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन, जिसका उद्देश्य ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से स्वतंत्रता हासिल करना था, 19 वीं शताब्दी के अंत और 20 वीं शताब्दी की शुरुआत में हुई वैश्विक घटनाओं से गहराई से प्रभावित था। इन घटनाओं ने न केवल आंदोलन के प्रक्षेपवक्र को ढाला, बल्कि भारत की मुक्ति की लड़ाई पर अंतर्राष्ट्रीय ध्यान भी आकर्षित किया। भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन पर अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं के सबसे

उल्लेखनीय प्रभावों में से एक अन्य देशों में उपनिवेशवाद विरोधी आंदोलनों का उदय था। इन आंदोलनों की जीत ने महात्मा गांधी और जवाहरलाल नेहरू जैसे भारतीय नेताओं के लिए प्रेरणा के स्रोत के रूप में कार्य किया, जिन्होंने औपनिवेशिक शक्तियों के खिलाफ प्रतिरोध के अहिंसक तरीकों का समर्थन किया। इसके अतिरिक्त, प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध जैसी घटनाओं ने स्वतंत्रता के लिए भारत के संघर्ष पर एक अमिट छाप छोड़ी। इन युद्धों में भारतीयों की भागीदारी ने ब्रिटिश साम्राज्य के प्रति उनकी निष्ठा को रेखांकित किया और स्व-शासन से इनकार के बारे में पूछताछ की। नतीजतन, इससे स्वतंत्रता की मांग बढ़ गई और इसे प्राप्त करने के प्रयास तेज हो गए। इसके अलावा, अंतर्राष्ट्रीय समर्थन ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। गांधी जैसे दूरदर्शी मार्टिन लूथर किंग जूनियर जैसी प्रभावशाली हस्तियों से पर्याप्त समर्थन जुटाने में सक्षम थे, जिन्होंने स्वतंत्रता के लिए भारत की लड़ाई और अफ्रीकी अमेरिकियों के नागरिक अधिकार आंदोलन के बीच समानताएं बताईं।

इस अध्ययन पर निम्नलिखित शोध परिणाम हैं:

- गांधी के असहयोग आंदोलन ने आयरलैंड और दक्षिण अफ्रीका में सफल आंदोलनों से प्रेरणा ली।
- सुभाष चंद्र बोस जैसे प्रभावशाली नेताओं ने हो ची मिन्ह और माओ त्से तुंग जैसे वैश्विक उपनिवेशवाद विरोधी हस्तियों से प्रेरणा ली।
- पूरे यूरोप में फासीवाद और साम्यवाद के उदय ने भी भारत के राष्ट्रीय आंदोलन के भीतर विचारधाराओं को आकार देने में भूमिका निभाई।
- 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आईएनसी) की स्थापना आंशिक रूप से उस युग के दौरान यूरोप में होने वाले राष्ट्रवादी आंदोलनों से प्रभावित थी।
- धर्मनिरपेक्षता और समाजवाद में नेहरू की मान्यताओं को इंग्लैंड में उनके अध्ययन के दौरान पश्चिमी लोकतांत्रिक आदर्शों के संपर्क में आने से ढाला गया था।

सुझाव:

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को आमतौर पर ब्रिटिश शासन से स्वतंत्रता प्राप्त करने के उद्देश्य से विशुद्ध रूप से आंतरिक संघर्ष के रूप में माना जाता है। फिर भी, इस आंदोलन को आकार देने और आगे बढ़ाने में अंतरराष्ट्रीय घटनाओं के महत्वपूर्ण प्रभाव को स्वीकार करना महत्वपूर्ण है। भारत में राष्ट्रवादी भावनाओं की वृद्धि और प्रगति प्रथम विश्व युद्ध जैसी वैश्विक घटनाओं से गहराई से प्रभावित थी, जिसने उपनिवेशवाद की शोषक प्रकृति को उजागर किया, और रूसी क्रांति, जिसने समाजवादी आदर्शों और क्रांतिकारी परिवर्तन की क्षमता का प्रदर्शन किया। इसके अलावा, महात्मा गांधी जैसे अंतरराष्ट्रीय हस्तियों के प्रभाव को अनदेखा नहीं किया जा सकता है, क्योंकि उन्होंने विदेशों के आंदोलनों से प्रेरणा ली, जैसे कि दक्षिण अफ्रीका का रंगभेद विरोधी आंदोलन और अमेरिका में नागरिक अधिकार संघर्ष। भारतीय संदर्भ के अनुरूप रणनीति और विचारधाराओं को अपनाकर, इन नेताओं ने ब्रिटिश प्रभुत्व के खिलाफ अहिंसक विरोध प्रदर्शनों को सफलतापूर्वक अंजाम दिया। इसके अतिरिक्त, ब्रिटेन पर डाले गए अंतर्राष्ट्रीय दबाव ने उन्हें भारतीय राष्ट्रवाद के प्रति अधिक महत्वपूर्ण रियायतें देने के लिए मजबूर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। द्वितीय विश्व युद्ध के समापन ने एशिया और अफ्रीका में उपनिवेशवाद के लिए एक नए सिरे से वृद्धि देखी, जिसने एक ऐसे वातावरण को बढ़ावा दिया जिसने ब्रिटेन के लिए अपने उपनिवेशों पर नियंत्रण बनाए रखना चुनौतीपूर्ण बना दिया। हालांकि, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि कुछ अंतरराष्ट्रीय घटनाओं ने भारत के राष्ट्रीय आंदोलन की प्रगति में बाधाएं भी पैदा कीं। एक प्रमुख उदाहरण द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान भारतीयों के बीच ब्रिटिश प्रयासों के लिए व्यापक समर्थन है, जो दक्षिण पूर्व एशिया में जापान की प्रगति के बारे में आशंकाओं से प्रेरित है। इन बाहरी प्रभावों ने भारत के भीतर राजनीतिक परिदृश्य को काफी प्रभावित किया।

इस अध्ययन पर निम्नलिखित महत्वपूर्ण शोध प्रभाव हैं:

- स्वतंत्रता प्राप्त करने में मिस्र और तुर्की जैसे अन्य राष्ट्रों की उपलब्धियों ने भारतीय राष्ट्रवादियों को आशा और प्रेरणा प्रदान की।
- प्रथम विश्व युद्ध के दौरान अंग्रेजों द्वारा किए गए कार्यों ने उनके सच्चे इरादों को प्रकाश में लाया और भारतीयों के बीच राष्ट्रवादी आंदोलन को और प्रज्वलित किया।
- इसके विपरीत, सोवियत संघ के चीन के समर्थन जैसी घटनाओं ने भारत के भीतर कम्युनिस्ट गुटों और स्वतंत्रता संग्राम के गैर-कम्युनिस्ट नेताओं के बीच संबंधों को प्रभावित किया।
- इस अवधि के दौरान यूरोप में फासीवादी शासन के उद्भव ने भारतीयों के लिए एक चेतावनी संकेत के रूप में कार्य किया, जिन्होंने ब्रिटिश सरकार से संभावित सत्तावादी नियंत्रण के बारे में चिंताओं को आश्रय दिया।
- जर्मनी, इटली और जापान सहित विभिन्न देशों की सहायता ने भारत में ब्रिटिश विरोधी गतिविधियों के लिए वित्तीय सहायता की सुविधा प्रदान की, जिससे राष्ट्रीय आंदोलन को बहुत आवश्यक प्रोत्साहन मिला।
- अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक कारकों ने भारत के राष्ट्रवादी आंदोलन को काफी प्रभावित किया, क्योंकि विश्व युद्धों के कारण करों में वृद्धि के परिणामस्वरूप औपनिवेशिक शासन के प्रति व्यापक आक्रोश पैदा हुआ।
- जवाहरलाल नेहरू जैसे निर्वासित भारतीय नेताओं ने विदेशों में अवसरों का प्रभावी ढंग से उपयोग किया ताकि वे अपने उद्देश्य के लिए समर्थन हासिल कर सकें और स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए विभिन्न दृष्टिकोणों में अंतर्दृष्टि प्राप्त कर सकें।

निष्कर्ष:

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को वैश्विक घटनाओं के प्रभाव के परिणामस्वरूप विभिन्न बाधाओं और परिवर्तनों का सामना करना पड़ा। यूरोप में राष्ट्रवाद के उद्भव, विशेष रूप से प्रथम विश्व युद्ध के बाद, भारतीय नेताओं और आम आबादी पर पर्याप्त प्रभाव पड़ा। उन्होंने स्वतंत्रता, समानता और लोकतंत्र के सिद्धांतों से

प्रेरणा ली जो इन घटनाओं के दौरान समर्थित थे। इसके अलावा, रूसी क्रांति और इसकी मार्क्सवादी विचारधारा ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के पाठ्यक्रम को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। विशेष रूप से, जवाहरलाल नेहरू और सुभाष चंद्र बोस जैसी प्रभावशाली हस्तियां समाजवादी सिद्धांतों से गहराई से प्रभावित थीं, उन्हें ब्रिटिश साम्राज्यवाद के व्यवहार्य विकल्प के रूप में मानती थीं।

इसके अतिरिक्त, दोनों विश्व युद्धों का भारत की अर्थव्यवस्था पर गहरा प्रभाव पड़ा, क्योंकि यह ब्रिटेन के युद्ध प्रयासों के लिए संसाधनों का एक महत्वपूर्ण आपूर्तिकर्ता बन गया। इसके परिणामस्वरूप भारतीयों के बीच स्व-शासन की तीव्र मांग हुई, जो मानते थे कि वे अपने स्वयं के संसाधनों पर नियंत्रण के हकदार हैं। इसके अलावा, द्वितीय विश्व युद्ध के बाद अपने उपनिवेशों को अधिक स्वायत्तता देने के लिए ब्रिटेन पर डाले गए अंतर्राष्ट्रीय दबाव ने भारत में स्वतंत्रता आंदोलनों की गति को तेज करने का काम किया। संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे देशों ने उपनिवेशवाद विरोधी नीतियों को अपनाया जिसने ब्रिटिश शासन के खिलाफ भारत के रुख को और मजबूत किया। अंत में, भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन पर अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं के गहन प्रभाव से इनकार नहीं किया जा सकता है। इन घटनाओं ने न केवल ब्रिटिश उपनिवेशवाद से स्वतंत्रता के लिए भारत के संघर्ष को प्रेरणा, समर्थन और प्रोत्साहन प्रदान किया, बल्कि इसकी गति में भी योगदान दिया।

अध्ययन की सीमाएँ:

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन पर अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं के प्रभाव की जांच करते समय, अध्ययन के इस क्षेत्र में मौजूद कुछ सीमाओं को स्वीकार करना महत्वपूर्ण है। सबसे पहले, भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को प्रभावित करने वाले अंतरराष्ट्रीय घटनाओं के सटीक तरीके से संबंधित व्यापक और विश्वसनीय आंकड़ों की कमी है। उस युग के कई दस्तावेज या तो खो गए हैं या जानबूझकर नष्ट कर दिए गए हैं, जिससे शोधकर्ताओं के लिए सटीक जानकारी तक पहुंचना चुनौतीपूर्ण हो गया है। इसके अलावा, इस अवधि के दौरान भारत की औपनिवेशिक प्रकृति को देखते हुए, स्वतंत्रता के लिए भारतीय संघर्ष के आसपास की अधिकांश ऐतिहासिक कथाओं को

पश्चिमी व्यक्तियों द्वारा प्रलेखित किया गया है, जिनके पास अपनी पक्षपाती व्याख्याएं हो सकती हैं। नतीजतन, यह भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन पर अंतरराष्ट्रीय घटनाओं के वास्तविक प्रभाव को सही ढंग से समझने और विश्लेषण करने में कठिनाइयों को प्रस्तुत करता है।

इसके अतिरिक्त, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि सभी अंतरराष्ट्रीय घटनाओं ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ भारत की लड़ाई पर समान प्रभाव नहीं डाला। कुछ घटनाओं ने दूसरों की तुलना में अधिक महत्व रखा, जिससे उनके समग्र प्रभाव को सामान्य बनाना भ्रामक हो गया। एक अन्य सीमा में अंतरराष्ट्रीय घटनाओं से उत्पन्न मूर्त परिणामों को मात्रात्मक रूप से मापने का प्रयास करना शामिल है, जैसे कि विदेशों में आयोजित विभिन्न सम्मेलनों या बैठकों में किए गए संकल्प या घोषणाएं। हालांकि ये निश्चित रूप से भारत के राष्ट्रवादी आंदोलन के भीतर नेताओं के लिए प्रेरणा के स्रोत के रूप में कार्य करते थे, लेकिन वे घरेलू नीतियों या आंदोलनों के भीतर प्रत्यक्ष कार्यों या परिवर्तनों का संकेत नहीं देते हैं।

अग्रगामी अनुसंधान:

ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से स्वतंत्रता प्राप्त करने के उद्देश्य से भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन, 19 वीं शताब्दी के अंत और 20 वीं शताब्दी की शुरुआत में अंतरराष्ट्रीय घटनाओं से गहराई से प्रभावित हुआ था। इन घटनाओं ने न केवल आंदोलन के प्रक्षेपवक्र को आकार दिया, बल्कि इसकी विचारधारा और रणनीतियों पर भी प्रभाव डाला। प्रथम विश्व युद्ध एक महत्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय घटना के रूप में खड़ा है जिसने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन पर एक स्थायी छाप छोड़ी। 1914 से 1918 तक फैले, इस युद्ध ने अंग्रेजों द्वारा संसाधनों और जनशक्ति की बढ़ती मांग के परिणामस्वरूप भारत में आर्थिक संकट पैदा किया। नतीजतन, इसने भारतीयों के बीच व्यापक असंतोष पैदा किया, जिन्होंने इसे अपने औपनिवेशिक स्वामी द्वारा शोषण के रूप में माना। इसके अलावा, युद्ध के दौरान जापान और ब्रिटेन के बीच गठबंधन ने कई भारतीयों के लिए साम्राज्यवाद के खिलाफ अपने संघर्ष में अन्य एशियाई देशों से समर्थन प्राप्त करने के लिए एक प्रेरणा के रूप में कार्य किया।

एक और परिणामी घटना जिसने स्वतंत्रता के लिए भारत की खोज को बहुत प्रभावित किया, वह 1917 की रूसी क्रांति थी। रूस में एक कम्युनिस्ट सरकार की स्थापना ने कई भारतीय क्रांतिकारियों में आशा पैदा की जो मार्क्सवादी विचारधारा के समर्थक थे। भगत सिंह जैसे नेता इस घटना से विशेष रूप से प्रभावित हुए और समाजवादी सिद्धांतों से प्रेरणा ली। इसके अलावा, द ईस्ट इंडिया एसोसिएशन (ईआईए) और ग़दर पार्टी जैसे पैन-एशियाई संगठनों के उद्भव ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

संदर्भ:

1. सिंह, वीरकेश्वर प्रसाद, "भारत का राष्ट्रीय आंदोलन और संवैधानिक विकास"; ज्ञानदा (पी.डी.), नई दिल्ली, 1998, पृष्ठ 208 द्वारा प्रकाशित।
2. चंद्रा, विपिन, मृदुला मुखर्जी, आदित्य मुखर्जी, पणिकर, सुचिता महाजन, "स्वतंत्रता के लिए भारत का संघर्ष"; हिंदी माध्यम कार्यायन निरदेशालय, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित, 1998, पृष्ठ 179.
3. शर्मा, भद्रदत्त और अंजनी कुमार जगदग्नि, "भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन और संवैधानिक विकास"; लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा, 2000-01, पृष्ठ 103 द्वारा प्रकाशित।
4. जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, पृष्ठ 103।
5. वर्मा, दीनाथ, "आधुनिक भारत"; ज्ञानदा प्रकाशन, नई दिल्ली, 1974 द्वारा प्रकाशित, पृष्ठ 446.
6. सिंह, प्रताप, "आधुनिक भारत"; भाग 2, 3; अनुसंधान प्रकाशन, नई दिल्ली, 1997, पृष्ठ 34.
7. चतुर्वेदी दिनेश चंद्र, "भारत का राष्ट्रीय आंदोलन और संवैधानिक विकास"; मीनाक्षी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1977, पृष्ठ 108.
8. गुप्ता, जेडी, "भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन और संवैधानिक विकास"; विकास पब्लिशिंग हाउस प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, 1977, पृष्ठ 116.

9. राय, गांधीजी, "राष्ट्रीय आंदोलन और भारतीय संविधान"; भारतीय भवन पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, पटना, 1999, पृष्ठ 88 द्वारा प्रकाशित।
10. विद्यालकांकर, सत्यकेतु, "भारत के राष्ट्रीय आंदोलन का इतिहास"; सरस्वती सदन, नई दिल्ली, 1995, पृष्ठ 115.
11. चंद्रा विपिन और अन्य, जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, पृष्ठ 183।
12. पांडे, बीएन (जनरल एडिटर), ए सेंचुरी, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का इतिहास भाग 2 (1919-1935); विकास पब्लिशिंग हाउस प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, 1998, पृष्ठ 157.
13. मिश्रा, बी.बी., "भारतीय राजनीतिक दल"; ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, 1976, पृष्ठ 249-50।
14. रस्तोगी, गौरी शंकर, "भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन और शासन और राजनीति"; नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1974, पृष्ठ 104-05।
15. रामगोपाल, "भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास"; पुस्तक केंद्र 72, हजरतगंज, लखनऊ, 1974, पृष्ठ 336।

****